9

जीवित सिफ़ारिश करने वाला

(इब्रानियों 7:25)

एक सुबह जब सेमुएल क्लेमंस[1] ने जब सुबह अखबार खोला तो वह अपनी मृत्यु की सूचना देखकर चकित रह गए। कुछ देर बाद श्रीमान क्लेमंस ने भाषण दिया और उसका आरम्भ इन शब्दों से किया: ''मेरे मरने की खबर अतिश्योक्ति है।''[2] कई साल पहले संसार ने ''परमेश्वर मर गया है'' लहर देखी थी। कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि बाइबल बेजान किताब है। इसके अलावा अविश्वासी लोग दावा करते हैं कि मसीहियत पुरानी पड़ चुकी है और अब फैंक दी जानी चाहिए। परमेश्वर और मसीहियत की मृत्यु की खबरे अतिश्योक्ति है!

मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता होती है कि आज *मसीहियत जीवित और अच्छी भली* है। हमारे पास जीवित परमेश्वर (1 तीमुथियुस 4:10), जीवित पुस्तक (इब्रानियों 4:12), और जीवित आशा (1 पतरस 1:3) है। हम इन में से किसी या सब विषयों पर बात कर सकते हैं; परन्तु इस प्रमाण के रूप में कि मसीहियत जीवित और अच्छी भली है, हम कुछ अप्रसद्धि उदाहरण देखेंगे: हमारे पास *एक जीवित सिफ़ारिश करने वाला* है। हमारा वचन पाठ इब्रानियों 7:25: ''इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह [यीशु] उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि *वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है*।'' इस वचन की सच्चाई को पूरा समझने के लिए इसे संदर्भ में देखना आवश्यक है। पहले हम इब्रानियों 7 के पूरे अध्याय पर कुछ समय लगाएंगे; फिर हम अपने वचन पाठ के पहले और बाद की आयतों को संक्षेप में देखेंगे। अन्त में हम आयत 25 पर भी ध्यान देंगे।

इब्रानियों 7

इब्रानियों की पुस्तक में मुख्य शब्द ''उत्तम'' है। किसी मण्डली में जिसका नाम नहीं लिया गया, कुछ या सभी यहूदी मसीही स्पष्टतया यहूदी मत में लौटने जाने पर विचार कर रहे थे। मसीहियत के आरम्भिक दिनों में बड़ी उत्तेजना पाई जाती थी, पर उसमें से कुछ कम हो गई है। अब इन सदस्यों को स्पष्टतया यहूदी धर्म के रीति रिवाज़ों की कमी फल रही थी। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक उन्हें यह दिखाते हुए कि मसीहियत में यहूदी मत से कुछ *उत्तम* है उन्हें वापस बाड़े में लाने का प्रयास कर रहा था।

अध्याय 7 से देखें और उसमें ''उत्तम'' शब्द को रेखांकित कर लें। आयत 7 में ''बड़ा'' शब्द मिलता है। आयत 19 ''उत्तम आशा'' की बात करती है। आयत 22 ''उत्तम वाचा'' का उल्लेख करती है। अध्याय 7 में मुख्य विषय मसीहियत की *उत्तम याजकाई* है। आयत 17 में हम पढ़ते हैं, ''क्योंकि उस [यीशु] के विषय में यह गवाही दी गई है कि तू मलिकिसिदक की रति पर युगानयुग याजक ठहरे।'' लेखक यह बता रहा था कि वह जो मलिकिसिदक की रीति

के अनुसार याजक है उन याजकों से असीमित रूप में बेहतर है जो लेवी की रीति के अनुसार याजक हैं।

घबराएं नहीं; हम ''रहस्यमयी मलिकिसिदक'' पर चर्चा नहीं करेंगे।[3] आयत 17 के मुख्य शब्द यह हैं: ''तू *युगानयुग* याजक है।''

इब्रानियों 7:20-28

अब हम अपने वचन पाठ के निकट संदर्भ अर्थात 20 से 28 आयतों पर ध्यान देंते हैं। वचन इस प्रकार आरम्भ होता है:

> और इसलिए कि मसीह का नियुक्ति बिना शपथ नहीं हुई। (क्योंकि वे [लेवीय याजक] तो बिना शपथ याजक ठहराए गए पर यह [यीशु को याजक बनाया गया] शपथ के साथ उसकी ओर से नियुक्त किया गया जिसने उसके विषय में कहा, कि प्रभु ने शपथ खाई, और वह उससे फिर न पछताएगा, कि तू युगानुयुग याजक है)'' (आयतें 20, 21)।

यह वाक्य भजन संहिता 110 से लिया गया है जिसे नये नियम के वक्ता और लेखक मसीहा के जी उठने, ऊपर उठाए जाने और महिमा पाने की भविष्यवाणी मांगते थे (प्रेरितों 2:34, 35; देखें 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20)। इब्रानियों 7:17 का हवाला भजन संहिता 110:4 से लिया गया है: ''यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।'' यहोवा जब कोई बात केवल *कहता* ही है तो वह *सच्ची* होती है। इसलिए जब कोई बात ''शपत के साथ'' करता है तो हम मान सकते हैं कि वह ''दोगुणी सच, तीगुणी सच, चौगुणी सच है।'' इसमें कोई संदेह नहीं है। जो कुछ है उसमें कोई शक नहीं है? यीशु, *युगानयुग याजक* है।

आयत 22 आगे कहती है, ''सो यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा।'' यीशु हमारा आत्मिक ''जामनी देने वाला'' है। कर्जे के लिए जामिन यह जानमी देता है कि कर्जा चुका दिया जाएगा। यीशु इस बात में हमारा जामिन है कि नई वाचा में परमेश्वर की अद्‌भुत प्रतिज्ञाओं को पूरा किया जाएगा!

आयत 23 कहती है, ''वे तो [लेवीय याजक] बहुत से याजक बनते आए, उसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती थी।'' हारून से लेकर इब्रानियों की पत्री के लिखे जाने तक होने वाले सभी याजकों पर ध्यान दें। लेवीयों के सैंकड़ों या हज़ारों लोगों ने याजकों के रूप में सेवा दी थी क्योंकि आवश्यक था कि कोई याजक हमेशा रहे। ''यदि याजक की आवश्यकता ही थी तो सदा के लिए एक ही याजक की आवश्यकता थी; यह पद बिना रुकावट के भरा होना आवश्यक था, चाहे आधिकारिक बदलाव हो जाए।''[4] एक के बाद एक याजक आए और मर गए। उन में से कुछ अच्छे थे, कुछ इतने अच्छे नहीं थे, और कुछ, बहुत, बहुत ही बुरे थे।

आयत 24 में हम पढ़ते हैं, ''पर यीशु युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजक पद अटल है।'' इन शब्दों पर ध्यान दें: ''वह *युगानुयुग* रहता है।'' यीशु मुर्दों में से जी उठा था। वह परमेश्वर के पास वापस उठा लिया गया था, परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया और सदा सदा तक बना रहता है! इसलिए उसकी याजकाई में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला। वह हमारा

''सदा-सदा का'' याजक है!

यह हमें हमारे वचन पाठ पर ले आया है। आयत 25 का आरम्भ होता है, ''इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है। ...'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''पूरा-पूरा उद्धार'' में ''पूरा-पूरा'' का अर्थ ''पूरी तरह'' है।[5] KJV में ''अन्त तक उद्धार'' है; परन्तु यूनानी शब्द का संकेत समय भी हो सकता है, जिस कारण NASB में ''सदा-सदा का उद्धार'' है। शायद लेखक ने दोनों अर्थों को मिलाना चाहा कि यीशु हमारा *पूरी तरह से* हर *प्रकार से* उद्धार कर सकता है। आयत 25 का समापन होता है, ''क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।'' इन शब्दों पर चिह्न लगा लें; हम थोड़ी देर में इन पर आएंगे।

वचन का समापन होता है:

> सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो; और उन माहयाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं प्रतिदिन पहले पापों और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए [जैसा कि महायाजक प्राश्चित के दिन करता था] क्योंकि उस [यीशु] ने अपने आपको बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया। क्योंकि व्यवस्था तो निर्भर मनुष्यों को महायाजक नियुक्त करती है; परन्तु उस शपथ का वचन [भजन संहिता 110:4 में] जो व्यवस्था के बाद खाई गई [भजन संहिता 110 मूसा की व्यवस्था दिए जाने के सैकड़ों साल बाद लिखी गई थी], उस पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किया गया है (आयतें 26-28)।

इब्रानियों 7:25

अब हम अपने वचन पाठ की समीक्षा और ध्यान से करने को तैयार होंगे: ''इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है'' (आयत 25)। इस आयत से हम दो मुख्य विचार लेंगे।

यीशु जीवित है ...

पहला यह है कि वह [यीशु] सर्वदा जीवित है। ग्रेट कमीशन देने के बाद यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''मैं जगत के अन्त तक *सदैव* तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20ख)। पौलुस ने रोमियों के नाम लिखा ''क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की'' (रोमियों 6:9)।[6] बार-बार इब्रानियों 7 अध्याय कहता है कि यीशु *सदा का* याजक है।

''... हमारे लिए सिफ़ारिश करने को।''

यीशु सदैव हमारे संग क्यों है? ''वह उनके लिए *विनती करने को* ['जो उसके द्वारा परमेश्वर के निकट आते हैं'] सर्वदा जीवित है।'' ''विनती'' क्या है? यह शब्द किसी दूसरे की सिफ़ारिश करने लिए इस्तेमाल होता है।[7]

मसीहा के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह सिफ़ारिश करने वाला होगा।

यशायाह 53 में दुखी सेवक के महान वचन में, हम पढ़ते हैं:

> इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा,
> और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा;
> क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया,
> वह अपराधियों के संग गिना गया;
> तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया,
> और, अपराधियों के लिये बिनती करता है (आयत 12)।

यह दृश्य क्रूसारोहरण का है, जिस कारण यह हवाला भी अपने सताने वालों के लिए यीशु की सिफ़ारिश का हो सकता है: ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?'' (लूका 23:34क)। जो कुछ यीशु ने क्रूस के ऊपर किया वही अब वह स्वर्ग में अपनी याजकीय सेवकाई के भाग के रूप में करता है।

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान उसने पतरस को बताया था, ''परन्तु मैं ने तेरे लिए बिनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे: और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना'' (लूका 22:32)।[8] यीशु की सिफ़ारिश का एक और उदाहरण यूहन्ना 17 में महायाजक के रूप में उसकी प्रार्थना है। उसने पहले तो प्रेरितों के लिए विनती की: ''मैं उन के लिए [प्रेरितों की ओर से] बिनती करता हूं, संसार के लिए बिनती नहीं करता हूं परन्तु उन्हीं के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं'' (आयत 9; देखें आयत 15)। फिर यीशु ने हमारे लिए सिफ़ारिश की। आयत 20 देखें: ''मैं केवल इन्हीं [प्रेरितों] के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उन के लिए भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करें [यह हमारी और अन्य सभी लोगों की बात है जो नये नियम में प्रेरितों की गवाही के कारण यीशु में विश्वास लाते हैं], कि वे सब एक हों।''[9]

जो कुछ यीशु ने पृथ्वी पर किया वही अब स्वर्ग में कर रहा है। इब्रानी मसीही लोगों को लेखक ने इसी बात पर ज़ोर देकर बताया। पहले इब्रानियों 2 पढ़ते हैं:

> इस कारण उस [यीशु] को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे। क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है (आयतें 17, 18)।

अब देखते हैं कि यह वचन इब्रानियों 4 के साथ कैसे जुड़ा है:

> सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (आयतें 14-16)।

हमारा भाई याजक हमारा एक महायाजक है जो ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी'' हो सकता है। KJV ''हमारी निर्बलता की भावना से परेशान'' है। मरकुस 7 अध्याय में जब यीशु ने गुंगे-बहरे व्यक्ति को चंगाई दी, तो उसने ''और स्वर्ग की ओर देखकर *आह भरी*'' (आयत 34)। यीशु ने जब मरियम और लाज़र के मित्रों को रोते देखा, ''तो *आत्मा में बहुत ही उदास हुआ,* और *घबराया*'' (यूहन्ना 11:33)।

यीशु ''सब बातों में'' हमारे जैसा बना और ''सब बातों में हमारी नाईं परखा गया,'' इस कारण वह ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी'' हो सकता है। मैं इसे बौद्धिक रूप में (अपने दिमाग में) जानता हूं कि जिसने मुझे बनाया वह मुझे जानता है (देखें भजन संहिता 103:14), पर यह जानने के लिए कि यीशु वास्तव में मेरे जैसा बना और सममुच में शरीर में मेरे संघर्षों को समझता है, भावनात्मक रूप में (मन में) मेरी सहायता करता है।

किसी को आपत्ति हो सकती है: ''पर यीशु ने कभी उस समस्या की बात नहीं की जो मेरे सामने होती है!'' उदाहरण के लिए कोई कह सकता है, ''यीशु का कोई साथी नहीं था जिसने उसे छोड़ दिया!'' यीशु की दुल्हन कलीसिया है (देखें इफिसियों 5:22-32; 2 कुरिन्थियों 11:2)। क्या कलीसिया सदा से यीशु की वफ़ादार रही है? कोई और यह आपत्ति कर सकता है, ''पर यीशु को कभी बेलगाम और नाफ़रमान बच्चों से वासता नहीं पड़ा!'' प्रभु के अपने बच्चे हैं (देखें इफिसियों 5:8)। क्या उसके बच्चे कई बार उसका दिल नहीं ताड़ते?

एक अन्तिम आपत्ति आ सकती है: ''पर यीशु तो लगभग तैंतीस वर्ष की आयु में मरा। उसे बुढ़ापे की पीड़ा में से कभी नहीं गुज़रना पड़ा!'' तौभी वह समझता है। आम-तौर पर एक बात सुनी जाती है कि ''मैं बूढ़ा हो गया हूं,'' पर ''बूढ़ा हो गया'' का क्या अर्थ है? ''बूढ़ा'' मैं केवल तभी लगता हूं जब दर्पण को देखता हूं। उसे छोड़कर मुझे बूढ़ा होने वाली कोई भावना नहीं लगती। सत्तर की उम्र पार करने के बाद मुझे कैसा लगता है? आम-तौर पर मुझे लगता है कि थक गया और चूर हो गया हूं; दर्द और पीड़ा रहती है। इस पर विचार करें। क्या यीशु को कभी थकावट लगी? क्या यीशु को कभी तकलीफ़ हुई?

एक बार जी. सी. ब्रीवर को एक ऐसे आदमी ने चुनौती दी जो कई त्रासदियों में से गुजरा था। उसने कहा, ''यीशु को कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ था।'' ... उसे नहीं मालूम कि मुझे क्या दुख है ...।'' भाई ब्रीवर का उत्तर था:

> मेरे भाई, मैं आपको बता दूं कि मसीह हमारा प्रभु आपकी भावनाओं को और आपकी बड़ी परीक्षा को जानता है और केवल वही उसे सह सकता है और आपके मन को चंगाई दे सकता यह सच है कि मसीह को मनुष्यों के बीच रहते समय ऐसा कुछ नहीं हुआ, पर हमें वैसी ही भावना को जानने के लिए वही अनुभव होना आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए: आप हंसे और मैं हंसा हूं। आप किसी बात पर हंसे हैं और मैं किसी और बात पर हंसा पर हम दोनों *हंसना* जानते हैं। आप रोए हैं और मैं रोया हूं। आपको किसी और बात ने रुलाया है जबकि मुझे किसी ओर की बात ने, पर हम दोनों जानते हैं कि रोना क्या हुआ है। हम दोनों क्रोधित हुए हैं। हमारा क्रोध एक ही अनुभव से नहीं भड़का, पर हम जानते हैं कि क्रोध क्या है।

यह एक वाद्य यन्त्र है। इस पर संगीत की सभी सुर हैं और हर सुर इस पर बनी है। हर बार छिड़ी है, पर हम जानते हैं कि अब तक बनाया गया हर संगीत इस साज़ पर नहीं बजा है। कई गीत इसकी ओर कभी नहीं बने हैं पर उनकी हर सुर की आवाज इसमें है।

अब मनुष्य का दिल हज़ारों तारों वाली सारंगी है। इसमें साज़ की तरह ही तारे हैं, पर मसीह हमारे प्रभु ने हर तार को छूआ है। वह हर भावना को जानता है।[10]

इब्रानियों की पुस्तक की अगली आयत पर चलते हुए हमें मुख्य वचन मिलता है: ''इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है'' (7:25)। रेमंड ब्राउन ने लिखा है कि ''रब्बी लोगों का मानना था कि लोगों की ओर से विनती करने का काम स्वर्गदूतों, पर वह भी विशेषकर महादूत मिकायल को दी गई सेवा है।'' फिर उसने लिखा:

[यीशु] हमारे लिए *अर्थपूर्ण ढंग से* विनती करता है। क्योंकि स्वर्गदूतों के विपरीत, उसे हमारी परीक्षाओं का स्वयं अनुभव है। वह *तरसपूर्ण ढंग से* हमारे लिए विनती करता है, क्योंकि स्वर्गदूतों के विपरीत वह वास्तव में जानता है कि हमें किस बात की आवश्यकता है। वह *प्रभावी ढंग से* हमारे लिए विनती करता है, क्योंकि, स्वर्गदूतों के विपरीत, उसके पास हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने की सामर्थ है।[11]

इब्रानियों की पुस्तक को छोड़ने से पहले अन्तिम बात पर ध्यान देते हैं: ''क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए [हमारी ओर से] अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे'' (9:24)।

बेशक इब्रानियों के पत्र के लेखक ने ही यह घोषणा नहीं कि यीशु हमारे लिए विनती करने को सर्वादा जीवित है। यही सच्चाई पौलुस ने रोमियों 8 अध्याय में बताई:

सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? ... परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देता है? मसीह वह है जो मर गया बर्न मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है (आयतें 31-34)।

हमारे ऊपर दोष लगाने के योग्य केवल दो ही हैं। पहला तो परमेश्वर है और वह ''हमारी ओर'' है। दूसरा यीशु है, और वह हमारे लिए मरा और हमारे लिए विनती करने के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ है।[12]

परमेश्वर की प्रेरणा पाया एक और जिसने यीशु के हमारे लिए सिफ़ारिश करने पर ज़ोर दिया है। यूहन्ना है, परन्तु उसने अलग शब्दावली का इस्तेमाल किया: ''यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धर्मी यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1ख)। ''सहायक'' का शब्द *parakletos* से लिया गया है जिसका अर्थ सहायता देने के लिए आपकी ओर बुलाया

गया व्यक्ति है।[13] इस आयत में ''advocate'' का इस्तेमाल कानूनी अर्थ में उसके लिए किया गया है जो आपका केस लड़ता है। यदि हमें आदालत में पेश होना हो, तो हमें बेहतरीन सफाई देने वाले का यानी बढ़िया से बढ़िया वकील जो हम खरीद सकते हैं करना होगा। हम में से अधिकतर लोगों को जितना हम कर सकते हैं उसी से ''काम चलाना'' पड़ता है। परन्तु आत्मिक रूप में हमारे पास बढ़िया से बढ़िया ''वकील'' है, यूं कहें कि स्वर्ग की ओर से सबसे बढ़िया वकील धर्मी यीशु मसीह है!

सदियों से, इस पर काफ़ी विवाद रहा है कि यीशु हमारे केस को संक्षेप में *कैसे* लड़ सकता है। कइयों ने यीशु की भौंहें चढ़ी हुई वाले पिता के सामने खड़े अपने बच्चों को क्षमा करने और उनकी सहायता करने की विनती करते हुए दिखाया है। यदि मसीह के सिफ़ारिश करने पर हमारे मन में ऐसी अवधारणा है तो हमें इसे तुरन्त निकाल देना चाहिए। रोमियों 8:31 याद रखें, जो कहता है कि ''परमेश्वर हमारी *ओर* है।''

हमारे लिए यह जानना अनावश्यक है कि मसीह हमारे लिए विनती कैसे करता है या उसकी सिफ़ारिश में क्या-क्या है। हमें केवल इतना जानना आवश्यकता है कि वह हमारे लिए सिफ़ारिश करता है। रॉबर्ट मिलिगन शायद सही था जब उसने कहा, *''विनती''* शब्द का इस्तेमाल यहां उस सब का संकेत देने के लिए जो मसीह अब अपने लोगों को धर्मी ठहराने, पवित्र ठहराने और छुटकारे के लिए कर रहा है, बड़े व्यापक अर्थ में इस्तेमाल हुआ है।[14] ''कैसे'' की चिन्ता न करें। केवल इस सच्चाई में आनन्दित हों कि वह *आपके* लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।

ध्यान दें कि वचन में *वर्तमान* काल का इस्तेमाल हुआ है। यानी ''वह जीवित *था*'' या ''वह जीवित *होगा*'' नहीं बल्कि ''वह जीवित *है*।'' यानी ''वह सर्वदा जीवित है।'' साल दर साल, महीने दर महीने, हफ्ते दर हफ्ते, दिन प्रति दिन, घण्टे दर घण्टे, मिनट दर मिनट, वह हमारे लिए सिफ़ारिश कर रहा है! एक लेखक का ढंग मुझे अच्छा लगता है कि जब हम यीशु के बारे में सोच भी नहीं होते, वह हमारे बारे में सोच रहा होता है![15]

परिवर्तनशील संसार में, यह टिकाऊ बात है कि यीशु जीवित है-वह सर्वदा जीवित है! वह हमारे लिए सिफ़ारिश कर रहा है। गड़बड़ी के दौरान हम किससे चिपके रह सकते हैं? कुछ लोग अपना भरोसा भौतिक वस्तुओं पर रखते हैं। परन्तु वे एक मिनट में हाथ से निकल सकती है। कुछ लोग अपना भरोसा शारीरिक सामर्थ पर रखते हैं पर वह पलक झपकते जा सकती है। कुछ पक्की सच्चाइयां हैं जिनसे हम अपने दिलों को कसकर रख सकते हैं: यीशु हम से प्रेम करता है ... वह हमारे लिए मरा और जी उठा ... और अब जीवित है और तुम्हारे लिए विनती करता है! परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारा एक जीवित सिफ़ारिश करने वाला है!

सारांश

अपने वचन पाठ की प्रतीज्ञा को देखते हुए इस तथ्य को न भूलें कि यह प्रतिज्ञा सशर्त है: ''इसी लिए जो *उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं,* वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, ...'' परमेश्वर ने सैकड़ों तरह से अपने प्रेम को दिखाया है, पर विशेष रूप में क्रूस पर अपने पुत्र को देखकर (रोमियों 5:8) और अब हमें उसके निकट आकर उसे जवाब देना आवश्यक है। याकूब ने लिखा, ''परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा; हे पापियो, अपने

हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो अपने हृदय को पवित्र करो'' (याकूब 4:8)।

हम ''परमेश्वर के पास कैसे आते हैं''? हम यीशु के द्वारा ''[यीशु] *उसके द्वारा* परमेश्वर के पास आते हैं।'' यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। यीशु की बात करते हुए, पतरस ने कहा, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)। हमें *यीशु में* विश्वास लाना (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराना (लूका 13:3) और *यीशु के पास आना* आवश्यक है, हमें *यीशु* में अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है (मत्ती 10:32; रोमियों 10:9), हमें पापों की क्षमा के लिए *यीशु के नाम में* बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38), और फिर हमें *यीशु में* नया जीवन आरम्भ करना आवश्यक है (रोमियों 6:3, 4)।

क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं? क्या आपने अपने पापों से मन फिरा लिया है? क्या आप यीशु में विश्वास करने और उसका अंगीकार करके उसमें बपतिस्मा लेने को तैयार हैं? यदि आप पहले से मसीही हैं तो क्या आपको उसके पास आना आवश्यक है? याद रखें कि यदि आप प्रभु के पास आते हैं तो वह आपके पास आएगा।

टिप्पणियां

[1]सेमुएल क्लेमेंस (1835–1910) अमेरिका के विख्यात लेखकों में से एक है। उसका साहित्यिक नाम मार्क टवेन था। [2]''मृत्यु'' (http://www.twainquotes.com/Death.html; 3इंटरनेट; 30 अप्रैल 2008 को देखा गया)। [3]यहां पर कई बार मैं मुस्कुराते हुए कहता हूं, ''यदि आप मलिकिसिदक के बारे में कुछ पूछना चाहते हैं तो पूछें ...'' और मैं मण्डली में किसी आदमी का नाम लेता हूं। [4]अलेग्जेंडर बालमेन ब्रूस, *दि एपिस्टल टू द हिब्रूस,* द्वितीय संस्करण (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1899; रिप्रिंट, यूजीन, ओरिगन: विप्फ एंड स्टॉक पब्लिशर्स, तिथि नहीं), 277. [5]अनुवादित शब्द ''सर्वदा'' का शब्द *panteles* है। यह उसी शब्द का रूप है जिसका अनुवाद ''पूर्ण, सिद्ध'' है और इसका अर्थ ''अन्त तक'' या ''अन्तत:'' हो सकता है (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स क्म्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 656)। [6]आपको चाहिए कि समय निकालकर उन कुछ प्रमाणों की सूची बनाएं कि यीशु फिर कभी न मरने के लिए मरे हुओं में से जी उठा था। [7]*दि अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. (2001), एस. वी. ''intercede.'' [8]यीशु ने रात भर के अपने प्रार्थना के समय में से एक के लिए पतरस के लिए प्रार्थना की (लूका 6:12)। [9]विशेषकर यीशु ने प्रार्थना की कि उसके *सभी* अनुयायी एक हों (देखें आयतें 21–23)। [10]जी. सी. ब्रीवर, *क्राइस्ट क्रूसीफाइड: ए बुक ऑफ सरमन्स* (पृष्ठ नहीं, 1928; रिप्रिंट, नैशविल्ले: बी. सी. गुडपेस्चर, 1952), 78–79.

[11]रेमंड ब्राउन, *क्राइस्ट अबव ऑल: दि मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1982), 135–36. [12]पौलुस का एक और वचन जिसे इस्तेमाल किया जा सकता है वह 1 तीमुथियुस 2:5 है। [13]वाइन, 111. [14]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू दि हिब्रूज़,* दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री, अंक 9 (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1954), 213. [15]जे. एन. डरबी, *नोट्स फ्रॉम लेक्चर्स ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज* (लंदन: जी. मौरिश, तिथि नहीं), 63 से लिया गया।